पाठ – रहीम के दोहे

दोहों का सारांश

रहीम ने अपने दोहों के माध्यम से बताया है कि व्यक्ति को परोपकारी होना चाहिए तथा छोटों का साथ नहीं छोड़ना चाहिए। प्रेम के धागे से सभी को बाँधकर रखना चाहिए। मनुष्य को पानी के समान निर्मल होना चाहिए। विपत्ति के समय पता चल जाता है कि कौन-सा व्यक्ति हमारा हितैषी है। हमें अपनी जीभ पर काबू रखना चाहिए। व्यर्थ की बातें नहीं बोलनी चाहिए। रहीम ने अंतिम दोहे में सच्चे मित्र के विषय में बताया है।

शब्दार्थ

- **तलवारि** – तलवार
- **लघु** – छोटा
- **नाहि** – नहीं
- **सरवर** – सरोवर
- **कपाल** – खोपड़ी
- **तरुवर** – वृक्ष
- **मानुष** – मनुष्य
- **भीतर** – अंदर
- **सरग** – स्वर्ग

दोहों की व्याख्या

दोहा-1

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि ॥
तरुवर फल नहि खात है सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, सम्पत्ति संचहि सुजान ॥

सन्दर्भ - प्रस्तुत दोहे 'रहीम के दोहे' पाठ से अवतरित हैं जिसके रचयिता अब्दुर्रहीम खानखाना है।

प्रसंग - रहीम जी ने प्रत्येक व्यक्ति के महत्त्व के बारे में बताया है।

व्याख्या - रहीम कह रहे हैं कि किसी बड़े को देखकर छोटे को अनदेखा न करें। जहाँ पर सुई का काम होता है वहाँ तलवार कुछ नहीं। कर सकती। सभी का अपना महत्त्व होता है। किसी भी वस्तु को छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए।

वृक्ष फल नहीं खाते हैं और सरोवर स्वयं का पानी नहीं पीता है। बल्कि ये दोनों मनुष्य की सेवा में सदैव तत्पर रहते हैं। रहीम जी कह रहे हैं कि जो सज्जन व्यक्ति होता है वह कभी भी अपनी सम्पत्ति का उपयोग स्वयं के लिए नहीं करता बल्कि वह उसका उपयोग दूसरों के लिए करता है।

eVidyarchive

दोहा-2

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय ॥
रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून ॥

सन्दर्भ - प्रस्तुत दोहे 'रहीम के दोहे' पाठ से अवतरित हैं जिसके रचयिता अब्दुरहीम खानखाना है।

प्रसंग - रहीम जी ने प्रेम और पानी के महत्त्व के बारे में बताया है।

व्याख्या - रहीम कहते हैं कि जो प्रेम होता है वह धागे के समान होता है, उसे तोड़ना नहीं चाहिए। यदि एक बार प्रेम टूट जाए तो वह पहले जैसा नहीं रहता। उसमें गाँठ पड़ जाती है।

रहीम जी कहते हैं कि हमें पानी का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि पानी के बिना सब सुना है। पानी न रहा तो सिपी में मोती नहीं बन पाएगा और न ही मनुष्य चून का उपयोग कर पाएँगे क्योंकि चून में पानी को सम्मिलित करने पर ही रोटी तैयार होती है जिससे लोग अपनी भूख मिटाते हैं।

दोहा-3

रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में जानि परत सब कोय ॥
रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही जूती खात कपाल ॥

सन्दर्भ - प्रस्तुत दोहे 'रहीम के दोहे' पाठ से अवतरित हैं जिसके रचयिता अब्दुर्रहीम खानखाना है।

प्रसंग - रहीम जी ने विपदा और जिह्वा का वर्णन किया है।

व्याख्या - रहीम कहते हैं कि विपदा जीवन में थोड़े ही समय के लिए होती है। कुछ समय पश्चात् यह विपदा समाप्त हो जाती है। जब हम विपदा में होते हैं, तब पता चल जाता है कि कौन व्यक्ति हमारा हित चाहता है और कौन अनहित। विपदा का समय सभी परतों को खोलकर रख देता है।

रहीम जी कहते हैं कि हमारी जिह्वा पागल होती है। यह जब चलना प्रारम्भ करती है तब यह स्वर्ग से लेकर पाताल तक विचरण कर आती है। जिह्वा अपनी बात कहकर मुँह के अन्दर छिप जाती है लेकिन इसकी वजह से जूते हमारी खोपड़ी को खाने पड़ते हैं।

दोहा-4

कहि रहीम सम्पति सगै, बनत बहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसे. ते ही साँचे मीत ॥

सन्दर्भ - प्रस्तुत दोहे 'रहीम के दोहे' पाठ से अवतरित है जिसके रचयिता अब्दुर्रहीम खानखाना है।

प्रसंग - इस दोहे में रहीम जी ने सच्चे सगे-सम्बन्धी व मित्र की पहचान करना सिखाया है।

egyanarchive

व्याख्या - रहीम जी कहते हैं कि जब किसी व्यक्ति के पास धन-सम्पत्ति होती है, तो कई लोग उसके मित्र व सम्बन्धी बन जाते हैं। लेकिन जो लोग बुरे समय में साथ देते हैं, वही सच्चे मित्र होते हैं।

पाठ से

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन-सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए।

(1) "रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल। आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।" दोहे का भाव है-

- सोच-समझकर बोलना चाहिए।
- मधुर वाणी में बोलना चाहिए।
- धीरे-धीरे बोलना चाहिए।
- सदा सच बोलना चाहिए।

उत्तर – सोच-समझकर बोलना चाहिए। (☆)

(2) "रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि। जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।" इस दोहे का भाव क्या है?

- तलवार सुई से बड़ी होती है।
- सुई का काम तलवार नहीं कर सकती।
- तलवार का महत्त्व सुई से ज्यादा है।
- हर छोटी-बड़ी चीज़ का अपना महत्त्व होता है।

उत्तर – हर छोटी-बड़ी चीज़ का अपना महत्त्व होता है। (☆)

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने यही उत्तर क्यों चुने?

उत्तर – हमने यही उत्तर इसलिए चुने हैं क्योंकि इनका वर्णन पाठ के अन्तर्गत हुआ है।

मिलकर करें मिलान

पाठ में से कुछ दोहे स्तम्भ 1 में दिए गए हैं और उनके भाव स्तम्भ 2 में दिए गए हैं और रेखा खींचकर सही भाव से मिलान कीजिए।

स्तम्भ-1
1. रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ों छिटकाय। टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय ॥
2. कहि रहीम सम्पत्ति सगे, बनत बहुत बहु रीत। बिपति कसौटी जे कसे ते हो साँचे मीत ॥
3. तरुवर फल नहिं खात हैं सरवर पिवहिं न पान। कहिं रहीम पर काज हित. सम्पत्ति संचहि सुजान॥

स्तम्भ-2
1. सज्जन परहित के लिए हो सम्पत्ति संचित करते हैं।
2. सच्चे मित्र विपत्ति या विपदा में भी साथ रहते हैं।
3. प्रेम या रिश्तों को सहेजकर रखना चाहिए।

egyanarchive

उत्तर –

स्तम्भ-1	स्तम्भ-2
1. रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ों छिटकाय। टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय ॥	3. प्रेम या रिश्तों को सहेजकर रखना चाहिए।
2. कहि रहीम सम्पत्ति सगे, बनत बहुत बहु रीत। बिपति कसौटी जे कसे ते हो साँचे मीत ॥	2. सच्चे मित्र विपत्ति या विपदा में भी साथ रहते हैं।
3. तरुवर फल नहिं खात हैं सरवर पिवहिं न पान। कहि रहीम पर काज हित. सम्पत्ति संचहि सुजान॥	1. सज्जन परहित के लिए हो सम्पत्ति संचित करते हैं।

पंक्तियों पर चर्चा

नीचे दिए गए दोहों का अर्थ या भावार्थ लिखिए-

(क) "रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ॥"

उत्तर – रहीम जी कहते हैं कि जो विपत्ति होती है वह अच्छी होती है। यह कुछ ही दिनों के लिए रहती है। इस विपत्ति के दौरान हमें पता चल जाता है कि कौन व्यक्ति हमारा हित चाहता है और कौन अनहित। विपत्ति सभी परतों को खोलकर रख देती है।

(ख) "रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल। आपु तो कहि भीतर रही जूती खात कपाल।"

उत्तर – रहीम जी कहते हैं कि जो जिह्वा होती है. वह बावरी (पागल) होती है। जब वह चलना शुरू करती है तब पता ही नहीं चलता कि कब स्वर्ग से पाताल की और पहुँच गई। वह कटु शब्द बोलकर मुख के अन्दर छिप जाती है जिसकी वजह से कपाल (खोपड़ी) को जूती खानी पड़ जाती है।

सोच-विचार के लिए

दोहों को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के बारे में पता लगाकर लिखिए-

1. "रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय" ।

(क) इस दोहे में 'मिले' के स्थान पर 'जुड़े' और 'छिटकाय' के स्थान पर 'चटकाय' शब्द का प्रयोग भी लोक में प्रचलित है। जैसे-

"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े जुड़े गाँठ पड़ जाय ॥"

इसी प्रकार पहले दोहे में 'डारि' के स्थान पर 'डार' 'तलवारि' के स्थान पर 'तरवार' और चौथे दोहे में 'मानुष' के स्थान पर 'मानस' का उपयोग भी प्रचलित हैं। ऐसा क्यों होता है?

उत्तर – इसी प्रकार पहले दोहे में डारि के स्थान पर 'डार' 'तलवारि' के स्थान पर 'तरवार' और चौथे दोहे में मानुष के स्थान पर 'मानस' का उपयोग प्रचलित है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यह शब्द समान है और इनका समान अर्थ प्रकट होता है।

(ख) इस दोहे में प्रेम के उदाहरण में धागे का प्रयोग ही क्यों किया गया है? क्या आप धागे के स्थान पर कोई अन्य उदाहरण सुझा सकते हैं? अपने सुझाव का कारण भी बताइए।

उत्तर – इस दोहे में प्रेम के उदाहरण में धागे का प्रयोग इसलिए हुआ है क्योंकि प्रेम भी धागे के समान नाजुक होता है। नहीं, मैं धागे के स्थान पर कोई अन्य शब्द का प्रयोग नहीं कर सकती।

2. "तरुवर फल नाहिं खात है. सरवर पियहि न पान"।

इस दोहे में प्रकृति के माध्यम से मनुष्य के किस मानवीय गुण की बात की गई है? प्रकृति से हम और क्या-क्या सीख सकते हैं?

इस दोहे में प्रकृति के माध्यम से मनुष्य में निःस्वार्थ भाव को जगाने का प्रयास किया है। प्रकृति से हम यह सीख सकते हैं- (i) दृढनिश्चयी होना

(ii) परोपकार करना

(iii) विनम्रता सीखना

शब्दों की बात

(क) कविता में आए कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन शब्दों को आपकी मातृभाषा में क्या कहते हैं? लिखिए।

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

कविता में आए शब्द	मातृभाषा में समानार्थक शब्द
(i) तरुवर	(i) वृक्ष
(ii) बिपति	(ii) परेशानी
(iii) छिटकाय	(iii) चटकाना
(iv) सुजान	(iv) नेक
(v) सरवर	(v) सरोवर
(vi) साँचे	(vi) सच्चे
(vii) कपाल	(vii) खोपड़ी

egyanarchive

(ख) शब्द एक अर्थ अनेक

"रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून" । इस दोहे में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं सम्मान, जल, चमक।

प्रश्न – नीचे दिए गए शब्दों के तीन-तीन अर्थ लिखिए।

उत्तर –

(i) कल	–	बीता हुआ दिन	आने वाला दिन	यंत्र या पुर्जा
(ii) पत्र	–	चिट्ठी	कागज़/पन्ना	वृक्ष का पत्ता
(iii) कर	–	हाथ	किरण	टैक्स (या शुल्क)
(iv) फल	–	वृक्ष का फल (जैसे, सेब, केला)		
		परिणाम या नतीजा		
		लाभ या कमाई		

पाठ से आगे

आपकी बात

"रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि"।

इस प्रकार अपने मनपसंद दोहे को इस तरह की शैली में अपने शब्दों में लिखिए। दोहा पाठ से या पाठ से बाहर का हो सकता है।

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय। टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।"

इस दोहे का भाव है- रहीमदास जी कहते हैं कि प्रेम धागे के समान अत्यन्त नाजुक होता है। उसे झटक कर तोड़ना नहीं चाहिए। यदि प्रेम का धागा एक बार टूट जाए तो पहले की तरह नहीं जुड़ पाएगा। उसमें गाँठ रह जाती है। प्रेम सम्बन्धों में प्रेम तथा स्नेह का भाव सदैव रहना चाहिए।

आज की पहेली

1. दो अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ खाने के काम उल्टा होकर नाच दिखाऊँ, मैं क्यों अपना नाम बताऊँ।

उत्तर – चना

2. एक किले के दो ही द्वार, उनमें सैनिक लकड़ीदार टकराएँ जब दीवारों से, जल उठे सारा संसार।

उत्तर – माचिस

egyanarchive